एनआइटी ने यूनेस्को एमजीआइईपी के साथ समझौता ज्ञापन पर किए हस्ताक्षर

जागरण संवाददाता, कुरुक्षेत्र : राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआइटी) ने अपने शिक्षकों और विद्यार्थियों को विज्ञान और तकनीकी के साथ-साथ भावनात्मक बुद्धिमता कौशल से जोड़ने के लिए एक नई पहल की है। इस पहल के तहत बुधवार को एनआइटी के विद्यार्थियों और शिक्षकों को भावनात्मक शिक्षा पर आनलाइन कोर्स करवाएगा यूनेसको एमजीआईईपी

एनआइटी के निदेशक प्रो. बीवी रमन रेड्डी। जागरण आर्काइव

एनआइटी ने यूनेसको शांति और सतत विकास महात्मा गांधी शिक्षा संस्थान (एमजीआइईपी) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते के तहत एमजीआइईपी की ओर से एनआइटी के करीब छह हजार विद्यार्थियों और शिक्षकों को 40 घंटे का आनलाइन कोर्स कराया जाएगा। स्वयं-निर्देशित भावनात्मक शिक्षा (सीक) के नाम के इस कोर्स में तकनीकी कौशल के साथ-साथ भावनात्मक बुद्धिमता कौशल की भी जानकारी दी जाएगी। एनआइटी के निदेशक प्रो. बीवी रमना रेड्डी ने कहा कि इस समझौते का उद्देश्य संस्थान के युवाओं को मानसिक रूप से सशक्त बनाना है। एमजीआइईपी की कार्यकारी अधिकारी अर्चना ने बताया कि आठ विश्वविद्याय से समझौता किया गया है।

निट कुरुक्षेत्र ने एसईईके ऑनलाइन पाठ्यक्रम की पेशकश करने के लिए यूनेस्को एमजीआईईपी के साथ की सांझेदारी

फास्ट मीडिया,
कुरुक्षेत्र, कुलतार।

पिछले 2 साल हम सभी के लिए चुनौतीपूर्ण रहे हैं। उन्होंने समाज के मानसिक और सामाजिक कल्याण को गंभीर रूप से प्रभावित किया है, विशेषकर उन छात्रों को जिन्हें न केवल शैक्षणिक जिम्मेदारियों से निपटना है, बल्कि एक विनाशकारी महामारी के परिणाम भी हैं, जिसका प्रभाव आज तक देखा जा सकता है। उपरोक्त स्थिति के जवाब में, एनआईटी कुरुक्षेत्र ने यूनेस्को एमजीआईईपी (शांति और सतत विकास के लिए महात्मा गांधी शिक्षा संस्थान) के साथ सांझेदारी करने का निर्णय लिया है। 2 मार्च 2022 को, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान कुरुक्षेत्र ने यूनेस्को एमजीआईईपी के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जो भारत में शैक्षणिक संस्थानों में आवश्यक सॉफ्ट स्किल्स को कैसे माना और पढ़ाया जाता है, में क्रांति लाने की इच्छा रखता है। इस समझौते का उद्देश्य संस्थान के युवा दिमाग से युवाओं को सशक्त बनाना है, जबकि ऑनलाइन व्याख्यान और जिज्ञासाओं के माध्यम से सामाजिक और भावनात्मक कल्याण की यात्रा शुरू करना है। लक्ष्य की ओर एक कदम पूरी तरह से डिजिटल, स्व-गतिशील 40 घंटे का सीक (सहानुभूति और दयालुता के लिए स्वयं-निर्देशित भावनात्मक शिक्षा) कार्यक्रम है जो मूल्यवान पारस्परिक कौशल सिखाता है जो कॉर्पोरेट जगत में अपरिहार्य हैं। समझौते पर प्रो. बी.वी. रमण रेड्डी, निदेशक एनआईटी कुरुक्षेत्र, प्रो. पंकज चांदना, अध्यक्ष एनआईटी कुरुक्षेत्र एलुमनाई एसोसिएशन, और संस्थान के सभी डीन और विभागाध्यक्षों की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। युवा दल के प्रमुख एबेल केन और यूनेस्को एमजीआईईपी की कार्यकारी अधिकारी अर्चना चौधरी भी उपस्थित थीं।

NIT कुरुक्षेत्र ने SEEK ऑनलाइन पाठ्यक्रम की पेशकश करने के लिए UNESCO MGIEP के साथ साझेदारी की है।

कुरुक्षेत्र (डी.आर.भटनागर/अनुज मुनीन्द्र जोशी) : पिछले 2 साल हम सभी के लिए चुनौतीपूर्ण रहे हैं। उन्होंने समाज के मानसिक और सामाजिक कल्याण को गंभीर रूप से प्रभावित किया है, विशेषकर उन छात्रों को जिन्हें न केवल शैक्षणिक जिम्मेदारियों से निपटना है, बल्कि एक विनाशकारी महामारी के परिणाम भी हैं, जिसका प्रभाव आज तक देखा जा सकता है। उपरोक्त स्थिति के जवाब में, एनआईटी कुरुक्षेत्र ने यूनेस्को एमजीआईईपी (शांति और सतत विकास के लिए महात्मा गांधी शिक्षा संस्थान) के साथ साझेदारी करने का निर्णय लिया है। 2 मार्च 2022 को, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान कुरुक्षेत्र ने यूनेस्को ऊप्म्द के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जो भारत में शैक्षणिक संस्थानों में आवश्यक सश्वफ्ट स्किल्स को कैसे माना और पढ़ाया जाता है, में क्रांति लाने की इच्छा रखता है। इस समझौते का उद्देश्य संस्थान के युवा दिमाग से युवाओं को सशक्त बनाना है, जबकि अश्वनलाइन व्याख्यान और जिज्ञासाओं के माध्यम से सामाजिक और भावनात्मक कल्याण की यात्रा शुरू करना है। लक्ष्य की ओर एक कदम पूरी तरह से डिजिटल, स्व-गतिशील 40 घंटे का सीक द्धसहानुभूति और दयालुता के लिए स्वयं-निर्देशित भावनात्मक शिक्षाद्ध कार्यक्रम है जो मूल्यवान पारस्परिक कौशल सिखाता है जो कश्वर्पोरेट जगत में अपरिहार्य हैं। समझौते पर प्रो. बी.वी. रमण रेड्डी, निदेशक एनआईटी कुरुक्षेत्र, प्रो. पंकज चांदना, अध्यक्ष एनआईटी कुरुक्षेत्र एलुमनाई एसोसिएशन, और संस्थान के सभी डीन और विभागाध्यक्षों की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। युवा दल के प्रमुख श्री एबेल केन और यूनेस्को एमजीआईईपी की कार्यकारी अधिकारी सुश्री अर्चना चौधरी भी उपस्थित थीं। डश्व रेड्डी ने बताया कि एनआईटी कुरुक्षेत्र सभी एनआईटी में से पहला है जो अपने छात्रों और कर्मचारियों को सीक पाठ्यक्रम प्रदान करता है। यूनेस्को ऊप्म्द के साथ साझेदारी में, प्रारंभिक चरण में 6000 छात्रों को पाठ्यक्रम की पेशकश की जाएगी और यह संख्या समय के साथ तेजी से बढ़ने की उम्मीद है। इस साझेदारी के माध्यम से, एनआईटी कुरुक्षेत्र के शिक्षार्थियों को एक समर्पित सीक अश्वनलाइन समुदाय में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता है, जहां वे अपने साथी शिक्षार्थियों के साथ-साथ सीक फैसिलिटेटरों के साथ बातचीत कर सकते हैं। कार्यक्रम संज्ञानात्मक कौशल के अलावा सहानुभूति, दिमागीपन, करुणा, महत्वपूर्ण पूछताछ जैसे कौशल विकसित करने की पेशकश करता है जो आमतौर पर अधिकांश संस्थानों का प्राथमिक ध्यान केंद्रित होता है। यह एक मजेदार और आकर्षक कार्यक्रम है जो 21वीं सदी के 10 कौशल पर केंद्रित है। यह समझौता एनआईटी कुरुक्षेत्र को अपने सभी छात्रों को समग्र व्यक्तित्व विकास प्रदान करने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करेगा। सेंटर फश्वर कम्पैशन, इंटिग्रिटी एंड सेक्युलर एथिक्स एट लाइफ यूनिवर्सिटी (यूएसए) द्वारा विकसित अनुकंपा वफ़ादारी प्रशिक्षण (सीआईटी) के आधार पर, एमजीआईईपी ने सीक को विकसित करने के लिए लाइफ यूनिवर्सिटी के साथ भागीदारी की। यह प्रमाणित पाठ्यक्रम अंग्रेजी भाषा में तैयार किया गया है और इसे यूनेस्को एमजीआईईपी के फ्रैमरस्पेस लर्निंग सिस्टम पर होस्ट किया गया है। भावनात्मक बुद्धिमता कौशल पर यह पाठ्यक्रम विज्ञान आधारित है और यूजीसी द्वारा समर्थित है और भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित है।

निट कुरुक्षेत्र ने एसइइक आनलाइन पाठ्यक्रम की पेशकश करने के लिए यूनेस्को एमजीआईईपी के साथ की सांझेदारी

दैनिक दि ग्राम टुडे, वैद्य पण्डित प्रमोद कौशिक।

कुरुक्षेत्र रू पिछले 2 साल हम सभी के लिए चुनौतीपूर्ण रहे हैं। उन्होंने समाज के मानसिक और सामाजिक कल्याण को गंभीर रूप से प्रभावित किया है, विशेषकर उन छात्रों को जिन्हें न केवल शैक्षणिक जिम्मेदारियों से निपटना है, बल्कि एक विनाशकारी महामारी के परिणाम भी हैं, जिसका प्रभाव आज तक देखा जा सकता है। उपरोक्त स्थिति के जवाब में, एनआईटी कुरुक्षेत्र ने यूनेस्को एमजीआईईपी (शांति और सतत विकास के लिए महात्मा गांधी शिक्षा संस्थान) के साथ सांझेदारी करने का निर्णय लिया है। 2 मार्च 2022 को, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान कुरुक्षेत्र ने यूनेस्को एमजीआईईपी के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जो भारत में शैक्षणिक संस्थानों में आवश्यक सॉफ्ट स्किल्स को कैसे माना और पढ़ाया जाता है, में क्रांति लाने की इच्छा रखता है। इस समझौते का उद्देश्य संस्थान के युवा दिमाग से युवाओं को सशक्त बनाना है, जबकि ऑनलाइन व्याख्यान और जिज्ञासाओं के माध्यम से सामाजिक और भावनात्मक कल्याण की यात्रा शुरू करना है। लक्ष्य की ओर एक कदम पूरी तरह से डिजिटल, स्व–गतिशील 40 घंटे का सीक (सहानुभूति और दयालुता के लिए स्वयं–निर्देशित भावनात्मक शिक्षा) कार्यक्रम है जो मूल्यवान पारस्परिक कौशल सिखाता है जो कॉर्पोरेट जगत में अपरिहार्य हैं। समझौते पर प्रो. बी.वी. रमण रेड्डी, निदेशक एनआईटी कुरुक्षेत्र, प्रो. पंकज चांदना, अध्यक्ष एनआईटी कुरुक्षेत्र एलुमनाई एसोसिएशन, और संस्थान के सभी डीन और विभागाध्यक्षों की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। युवा दल के प्रमुख एबेल केन और यूनेस्को एमजीआईईपी की कार्यकारी अधिकारी अर्चना चौधरी भी उपस्थित थीं। डा. रेड्डी ने बताया कि एनआईटी कुरुक्षेत्र सभी एनआईटी में से पहला है जो अपने छात्रों और कर्मचारियों को सीक पाठ्यक्रम प्रदान करता है। यूनेस्को एमजीआईईपी के साथ सांझेदारी में, प्रारंभिक चरण में 6000 छात्रों को पाठ्यक्रम की पेशकश की जाएगी और यह संख्या समय के साथ तेजी से बढने की उम्मीद है। इस सांझेदारी के माध्यम से, एनआईटी कुरुक्षेत्र के शिक्षार्थियों को एक समर्पित सीक ऑनलाइन समुदाय में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता है, जहां वे अपने साथी शिक्षार्थियों के साथ–साथ सीक फैसिलिटेटरों के साथ बातचीत कर सकते हैं। कार्यक्रम संज्ञानात्मक कौशल के अलावा सहानुभूति, दिमागीपन, करुणा, महत्वपूर्ण पूछताछ जैसे कौशल विकसित करने की पेशकश करता है जो आमतौर पर अधिकांश संस्थानों का प्राथमिक ध्यान केंद्रित होता है। यह एक मजेदार और आकर्षक कार्यक्रम है जो 21वीं सदी के 10 कौशल पर केंद्रित है। यह समझौता एनआईटी कुरुक्षेत्र को अपने सभी छात्रों को समग्र व्यक्तित्व विकास प्रदान करने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में मद्द करेगा। सेंटर फॉर कम्पैशन, इंटिग्रिटी एंड सेक्युलर एथिक्स एट लाइफ यूनिवर्सिटी (यूएसए) द्वारा विकसित अनुकंपा वफादारी प्रशिक्षण (सीआईटी) के आधार पर, एमजीआईईपी ने सीक को विकसित करने के लिए लाइफ यूनिवर्सिटी के साथ भागीदारी की। यह प्रमाणित पाठ्यक्रम अंग्रेजी भाषा में तैयार किया गया है और इसे यूनेस्को एमजीआईईपी के फ्रैमरस्पेस लर्निंग सिस्टम पर होस्ट किया गया है। भावनात्मक बुद्धिमता कौशल पर यह पाठ्यक्रम विज्ञान आधारित है और यूजीसी द्वारा समर्थित है और भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित है।